पैग़ाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

भाषण

हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद
ख़लीफ़तुल मसीह द्वितीय रज़ि०

पैग़ाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

(समस्त धर्मों के अनुयायियों को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम
के पैग़ाम को स्वीकार करने और
पारस्परिक मेल-मिलाप एवं शान्ति की शिक्षा)

भाषण
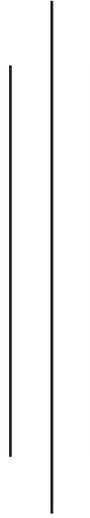
हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद
ख़लीफ़तुल मसीह द्वितीय रज़ि०

नाम पुस्तक	: पैग़ाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम
Name of book	: Paigham Hazrat Masih Mauud Alaihissalam
लेखक	: हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफ़तुल मसीह द्वितीय[रज़ि॰]
Writer	: Hazrat Mirza Bashiruddin Mahmood Ahmad Khalifatul Masih 2nd[RA]
अनुवादक	: अली हसन एम. ए. एच. ए.
Translator	: Ali Hasan M.A. - H. A.
संस्करण	: प्रथम संस्करण (हिन्दी) जून 2018 ई
Edition	: 1st Edition (Hindi) June 2018
संख्या	: 1000
Quantity	: 1000
प्रकाशक	: नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
Publisher	: Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)
मुद्रक	: फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर, (पंजाब)
Printed at	: Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur (Punjab)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू-व-नुसल्ली अला रसूलिहिलकरीम

पैग़ाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

भाषण - हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब

ख़लीफ़तुल मसीह द्वितीय

(जो हुजूरे अनवर ने 11 जुलाई सन् 1915 ई. को मियाँ सिराजुद्दीन साहिब लाहौर के प्रांगण में एक जनसभा को संबोधित किया)

मैं लाहौर कोई भाषण देने या किसी जलसे में शामिल होने के लिए नहीं आया था। बल्कि मेरे गले में कुछ तकलीफ थी। जिसके कारण मैं मजबूर हुआ कि लाहौर आकर इसका इलाज कराऊँ। जब मैं यहाँ आया तो मेरे दिल ने कहा अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है कि मुझे इस तकलीफ से आराम होगा या नहीं और ख़ुदा ही भलीभांति जानता है कि मैं इस बीमारी से अच्छा हो पाऊँगा या नहीं। लेकिन जब ख़ुदा तआला ने यह मौका दिया है कि मैं उस राज्य की राजधानी में आया हूँ जिसका मैं निवासी हूँ तो बेहतर है कि मैं इस जगह उन समस्त लोगों को जो अपने अन्दर सत्य की अभिलाषा रखते हैं वह पैग़ाम पहुँचा दूँ जो उस ख़ुदा ने जो सब का स्रष्टा है अपने बन्दों की ओर भेजा है।

मैं देखता हूँ कि जब एक मामूली सा आदमी गले में ढोल लटकाकर मुनादी करता हुआ रास्ते से गुज़रता है तो लोग सुनने के लिए दौड़े चले आते हैं कि क्या मुनादी कर रहा है। तो वह इंसान

जो दुनिया की हैसियत के लिहाज से भी प्रतिष्ठित हो और विरोधी भी स्वीकार करें कि वह प्रतिष्ठित और सम्माननीय है। जब वह दुनिया में पुकार-पुकार कर कहे कि मैं ख़ुदा की ओर से मुनादी कर रहा हूँ कि हे सुनने वालो! तो क्या हर एक आदमी का कर्तव्य नहीं कि कम से कम उस मामूली आदमी की मुनादी की तरह उसकी आवाज़ को भी सुने और पूछे कि क्या ऐलान कर रहे हो? अत: मैं हर एक न्यायप्रिय और सत्याभिलाषी से उम्मीद करता हूँ कि वह इस पैग़ाम को ग़ौर से सुनेगा जो मैं बयान करने लगा हूँ। यह उस ख़ुदा का पैग़ाम है जो हर एक चीज़ का पैदा करने वाला है, हर चीज़ का मालिक है और हर एक जानदार का प्रतिपालक है, जिसके पास एक दिन सब लोगों को हाज़िर होना है। फिर इस पैग़ाम को लाने वाला कोई मामूली आदमी नहीं, बल्कि वह है जो कहता है कि मैं वह मसीह हूँ जिसकी ख़बर इंजील ने दी है। मैं वह नबी हूँ जिसकी ख़बर दानियाल नबी ने दी है। मैं वह महदी हूँ जिसकी ख़बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दी है। मैं वह कृष्ण हूँ जिसकी ख़बर गीता में लिखी है। मैं वह मैसिया दिरहमी हूँ जिसकी ख़बर जामासिप ने अपनी किताब जामासिपी में लिखी है। इसके अलावा वह यही नहीं कहता बल्कि यह भी कहता है कि मैं तमाम् दुनिया की तरफ़ मेल-मिलाप कराने और सब को एक धर्म पर एकत्र करने के लिए आया हूँ। उसका यह दावा बहुत बड़ा दावा है। अत: हर एक न्यायपप्रिय का कर्तव्य है कि उसके दावा को सुन तो ले। मैं मानता हूँ कि बहुत से लोग उसको स्वीकार नहीं करेंगे और यह प्रकृति का विधान है कि ख़ुदा के बरगुजीदों (अवतारों) को बहुत से लोग क़बूल नहीं किया करते। क्या यह सच नहीं कि कृष्ण की उस ज़माने में मुख़ालिफत की गयी? क्या यह सच्ची घटना नहीं

कि आख़िरी★ नबी जो ख़ात्मुन्नबीयीन और सब नबियों के सरदार हैं उनकी भी मुख़ालिफ़त की गयी? क्या यह सच नहीं कि आज तक कोई भी नबी ऐसा नहीं गुज़रा जिसका कोई भी मुख़ालिफ़ न रहा हो। जब यह बात है तो यह सोचना कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को सारी दुनिया मान ले और कोई मुख़ालिफ न रहे मूर्खता है क्योंकि यह प्राकृतिक नियमों के विरुद्ध है अतएव ऐसा होना असम्भव है। चूँकि इन्सानों के भिन्न-भिन्न स्वभाव होते हैं इसलिए नबियों को सब के सब क़बूल नहीं कर सकते। हाँ कुछ ऐसे होते हैं जो क़बूल कर लेते हैं लेकिन कुछ ऐसे भी होते हैं जिन तक सच्चा पैग़ाम पहुँचता ही नहीं और कुछ जल्दबाज़ी से काम लेकर इन्कार भी कर देते हैं। इसलिए यह विचार ग़लत है कि किसी एक इन्सान को सारी दुनिया मान ले। लेकिन मैं इस समय आप लोगों के सामने एक ऐसे इन्सान का पैग़ाम पेश करता हूँ जिसको ख़ुदा तआला ने सारी दुनिया की तरफ़ भेजा है और जिससे ख़ुदा का वादा है कि दुनिया के अधिकतर लोग तेरे हाथ पर सच्चाई को क़बूल करेंगे और तू इस्लाम का चेहरा ज़ाहिर करेगा। जिसके बारे में बहुत से नबियों ने भविष्यवाणियाँ की हैं और हर एक धर्म के लोग उसके इन्तेज़ार में बैठे हैं। ईसाई, हिन्दू, यहूदी, पारसी इत्यादि सभी धर्मों के लोग मानते हैं कि हमारी किताबों में आख़िरी ज़माने (अर्थात् कलियुग) में आने वाले सुधारक के बारे में भविष्यवाणी मौजूद है। यहाँ कोई चीनी आदमी मौजूद नहीं लेकिन अगर किसी चीनी से पूछोगे तो मालूम हो जाएगा कि उनकी किताबों में भी कलियुग में

★**हाशिया -** आख़री इसलिए कि आप के बाद कोई नबी शरीअत वाला नहीं आ सकता। कोई नुबुव्वत आप के रास्ते नहीं आ सकता अत: भविष्य में नुबुव्वत आप के फैज़ और अनुकरण तथा मुहर से मिल सकती है।

आने वाले एक अवतार की भविष्यवाणी मौजूद है। अतः जब सारे धर्म इस पर सहमत हैं तो अवश्य इसमें ख़ुदा तआला की बहुत बड़ी हिकमत है। बहुत से लोग ऐसे होते हैं जो यह कहते हैं कि यह सब ढकोसले हैं न कोई आया न कोई आएगा। मैं कहता हूँ कि क्या ढकोसले ऐसे ही होते हैं जो बहुत से देशों में और बहुत से धर्मों की किताबों में फैल जाते हैं। अगर यह बात सिर्फ हज़रत मसीह की किताब में होती तो कोई कह सकता था कि ढकोसला है। अगर सिर्फ दानियाल नबी की किताब इस भविष्यवाणी का ऐलान करने वाली होती तो कह सकता था ढकोसला है। लेकिन भिन्न-भिन्न नबी जो भिन्न-भिन्न देशों में आए और भिन्न-भिन्न किताबें लाए उन्होंने एकमत होकर यह ख़बर दी कि आख़िरी ज़माने में दुनिया में एक नबी आएगा और उसके प्रकट होने का समय वह होगा जब दुनिया में ख़तरनाक जंगें होंगी और दुनिया उनके द्वारा हिल जाएगी उसके बाद उस आने वाले सुधारक के द्वारा दुनिया में अमन और मेल-मिलाप क़ायम होगा। अतः यह किस तरह सम्भव है कि भिन्न-भिन्न देशों के अवतार एक आने वाले की एकमत होकर ख़बर दें और उन सबकी भविष्वाणी ढकोसला कहलाए। वे नबी आपस में कब एकत्र हुए कि सब ने मिलकर एक बात रची?

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का पैग़ाम -

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का जो पैग़ाम मैं सुनाने के लिए खड़ा हुआ हूँ वह नया भी नहीं और पुराना भी नहीं। नया तो इसलिए नहीं कि वह वही पैग़ाम है जो ख़ुदा की तरफ़ से आने वाले पैग़म्बर हमेशा से सुनाते आए हैं और पुराना इसलिए नहीं कि इस समय दुनिया उस पैग़ाम को इस तरह भूल गई है कि मानो कभी भेजा ही नहीं गया। दुनिया का

कोई ऐसा मज़हब नहीं जिसमें वह पैग़ाम नहीं भेजा गया। हर मजहब में इसकी शिक्षा मौजूद है मगर अब दुनिया उसे भूल गई है और एक शब्द भी याद नहीं,इसलिए नया है।

अल्लाह तआला की रबूबियत (पालनहारिता) -

अल्लाह तआला की तरफ़ से भिन्न-भिन्न युगों में भिन्न-भिन्न नबी आए और ऐसा ही होना चाहिए था। क़ुरआन शरीफ शुरू ही इस तरह होता है-

(अल फ़ातिहा - 2) اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ

समस्त प्रशंसाएँ ख़ुदा के लिए हैं। क्यों? इसलिए कि वह समस्त लोकों का रब्ब है। जिसकी रबूबियत किसी ख़ास चीज़ से विशिष्ट नहीं। उदाहरणतः उसका सूरज है वह कभी ऐसा नहीं चढ़ेगा कि उसकी रोशनी सिर्फ मुसलमानों तक ही सीमित हो और ईसाई, हिन्दू,यहूदी इत्यादि धर्मों के लोग उससे वंचित रहें या उसकी रोशनी सिर्फ ईसाइयों को ही पहुँचे या सिर्फ हिन्दुओं के लिए हो या किसी और ख़ास मज़हब के लोगों के लिए हो, बल्कि सब लोगों के लिए है चाहे कोई मोमिन हो या काफ़िर, हिन्दू हो या ईसाई नास्तिक हो ईशभक्त। जो कोई भी उससे फायदा उठाना चाहे उसके लिए आज़ादी है। लेकिन अगर कोई दरवाज़ा बन्द करके अन्दर बैठ जाए या अपनी ग़लती से आँखों को बन्द कर ले तो यह उसका अपना क़सूर है। ख़ुदा तआला का सूरज उस पर रौशनी को बन्द नहीं करता। मैं इस आयत के बारे में जब नक्शा खींचता हूँ तो हैरान रह जाता हूँ कि इन्सान दाना बोता है बैल उसके साथ काम करते हैं और वह सारा-सारा दिन उनसे काम लेता है, हल चलाता है पानी देता है। अगर साल के बाद खेत से सारा दाना ही दाना पैदा होता और भूसा न होता तो

इन्सान ऐसा लालची है कि बैलों को दाना न डालता और सारा का सारा ग़ल्ला अपने काम में ही ले लेता। लेकिन ख़ुदा जिस तरह इन्सानों का रब्ब है उसी तरह हैवानों का भी रब्ब है। उसने अगर इन्सानों के लिए दाना पैदा किया है तो साथ ही हैवानों के लिए भी भूसा पैदा किया है। क्योंकि वह जानता है कि मेहनत करने में इन्सान और हैवान दोनों शामिल हैं। अगर हैवानों के लिए अलग हिस्सा न रखा गया तो इन्सान अपनी आवश्यकताओं से मजबूर होकर उन्हें वंचित कर देगा। जैसा कि पहले ज़माने में जानवरों के चरने के लिए बड़ी-बड़ी चरागाहें छोड़ी जाती थीं लेकिन अब उनको खेतीबाड़ी के काम में प्रयोग कर लिया गया है और बहुत कम चरागाहें रह गई हैं। अतः खुदा तआलाने जिस तरह खेत से दाना निकाला है उसी तरह जानवरों के पेट के मुताबिक़ भूसा भी निकाला है। इसी तरह हर एक चीज़ में देख लो। मैं सोचता रहता हूँ कि अगर मेवे इत्यादि में अलग न होता तो इन्सान सारे के सारे मेवा को ही खा जाते और आगे पैदा होने के लिए बीज भी न छोड़ते। लेकिन ख़ुदा तआला ने ऐसा इन्तेज़ाम कर दिया है कि उनके बीज महफ़ूज़ रखे जाते हैं। अतः ख़ुदा पूरे ब्रेह्माण्ड का रब्ब है जो गर्म और ठंडे देशों के रहने वालों गोरों, कालों, मुसलमानों, ईसाइयों, हिन्दुओं इत्यादि सब का ख़ुदा है।

हर क़ौम में नबी (अवतार) -

अतः इस्लाम और क़ुरआन जिस ख़ुदा को दुनिया के सामने पेश करता है वह ऐसा ख़ुदा नहीं है जिसका किसी ख़ास क़ौम से सम्बन्ध हो बल्कि वह सारी क़ौमों और सारी दुनिया का ख़ुदा है। इसीलिए क़ुरआन शरीफ यह दावा करता है कि सारी क़ौमों की तरफ़ रसूल आते रहे हैं जैसा कि फ़रमाया-

وَاِنۡ مِّنۡ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَا فِیۡهَا نَذِیۡرٌ (फ़ातिर - 25)

कोई क़ौम और कोई सम्प्रदाय ऐसा नहीं, जिसमें कोई नबी न भेजा गया हो। क्योंकि वह पूरे ब्रह्माण्ड का रब्ब है।

अतः किस तरह हो सकता था कि वह सारी क़ौमों में नबी न भेजता बल्कि किसी ख़ास क़ौम में भेजता। लेकिन अगर बाइबिल पढ़ो तो उससे मालूम होता है कि ख़ुदा ने सिर्फ़ हज़रत नूह की औलाद से कलाम (संवाद) किया। हज़रत इब्राहीम से कलाम किया। क्या हिन्दुस्तान के लोग ख़ुदा तआला की मख़्लूक़ (सृष्टि) न थे या यूरोप,अफ्रीका और अमेरिका के लोगों का ख़ुदा ख़ालिक़ (स्रष्टा) न था। जब सब उसी की मख़्लूक़ थे तो जिस तरह उसने चाँद, सूरज, हवा, पानी इत्यादि में कंजूसी से काम नहीं लिया हालाँकि ये जिस्म के लिए सामान हैं फिर कैसे सम्भव था कि वह ख़ास-ख़ास लोगों के अतिरिक्त दूसरों की रूह के लिए कोई सामान न करता और उन्हें यूँ ही छोड़ देता। हमें इस्लाम ने ऐसे ख़ुदा के बारे में बताया है जो किसी ख़ास क़ौम का नहीं, बल्कि सारी दुनिया का है। इसलिए वह सारी दुनिया के नबियों को मानने की शिक्षा देता है।

हमारे सामने जब कोई यह कहता है कि हमारे देश में भी अमुक नबी आया तो हम कहते हैं,अल्लाहो अकबर (अर्थात् अल्लाह सबसे महान है)। क्यों? इसलिए कि इससे आयत وَاِنۡ مِّنۡ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَا فِیۡهَا نَذِیۡرٌ के वर्णन की सच्चाई साबित हुई। ऐसे मौक़ा पर केवल एक ईसाई या हिन्दू के लिए ही नहीं बल्कि इस्लाम के सिवा दुनिया के हर मज़हब के लोगों के लिए मुश्किल है कि वे ऐसी शिक्षा प्रस्तुत कर सकें। मगर इस्लाम का मानने वाला कभी शर्मिन्दा नहीं होता। जब कभी उसके सामने किसी नबी का नाम पेश किया जाएगा तो वह ख़ुशी से अल्लाहो अकबर कह कर कहेगा कि अलहम्दो लिल्लाह वह किताब जिस पर मैं चलता

हूँ कैसी-कैसी महान सच्चाइयाँ अपने अन्दर रखती है जबकि वह ऐसे देश में उतरी जिसके दूसरे देशों से तनिक भी सम्पर्क न थे और कोई ऐसे साधन न थे जिनसे उसे दूसरे देशों के हालात मालूम हो सकें। लेकिन चूँकि उसके नाज़िल (अवतरित) करने वाला रब्बुल आलमीन था इसलिए उसने समस्त संसार के नबियों को सच्चा ठहराया। तात्पर्य यह कि दुनिया में हर क़ौम और हर मुल्क़ में नबी हुए हैं। जैसा कि क़ुरआन शरीफ़ की निम्नलिखित आयत وَاِنْ مِّنْ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَا فِيْهَا نَذِيْرٌ और اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ से सिद्ध होता है और नबियों का सिलसिला कोई नया सिलसिला नहीं है। अतः हज़रत मसीह मौऊद का उद्देश्य और उनके प्रादुर्भाव का मतलब पता करने के लिए हमें किसी आदमी से पूछने की जरूरत नहीं। जो उद्देश्य उन पहले नबियों के प्रादुर्भाव का था वही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रादुर्भाव का है। जो पैग़ाम नबियों के द्वारा दुनिया को दिया गया वही पैग़ाम हज़रत मसीह मौऊद के द्वारा दिया गया है और जिस बात की तरफ़ उनके द्वारा बुलाया जाता था उसी की ओर हज़रत मसीह मौऊद के द्वारा बुलाया गया है। इसी दृष्टि से मैंने कहा था कि वह पैग़ाम जो हज़रत मसीह मौऊद के द्वारा अल्लाह तआला ने दुनिया की तरफ़ भेजा है वह कोई नया पैग़ाम नहीं बल्कि पुराना ही पैग़ाम है और नया सिर्फ़ इस दृष्टि से है कि इस ज़माने के लोगों ने उसे ऐसा ही भुला दिया है कि अब वह उनके लिए एक नए पैग़ाम की तरह ही है।

नबियों के आने का उद्देश्य -

अब प्रश्न यह उठता है कि पहले नबी दुनिया में क्या पैग़ाम लाए थे और किस काम पर मुक़र्रर किए जाते थे तो इसका जवाब क़ुरआन

करीम में मौजूद है और कई स्थानों पर उस पैग़ाम को ख़ूब खोलकर बयान किया गया है जो नबियों के द्वारा भेजा जाता है। बल्कि उस पैग़ाम का सारांश तो इस्लाम और ईमान के शब्द से ही पता लग जाता है। ख़ुदा तआला ने इस आख़िरी धर्म का नाम इस्लाम उसके क़बूल करने का नाम ईमान रखकर सारे धर्मों के उद्देश्य की ओर संकेत कर दिया है। इस जगह जो लोग बैठे हैं सम्भवतः उनमें से अधिकतर अरबी नहीं जानते इसलिए सम्भव है कि मेरे मतलब को न समझ सकें कि इन शब्दों से किस तरह नबियों के प्रादुर्भाव का उद्देश्य निकलता है। इसलिए मैं सारांशतः बता देता हूँ कि इस्लाम का अर्थ है आज्ञापालन और ईमान का अर्थ है मानना। इस संसार में जो नबी भेजे जाते हैं वे इसलिए भेजे जाते हैं कि लोग उनकी आज्ञापालन करें और उनकी बातों को मानें। यह अर्थ तो इन शब्दों के साधारण अर्थों के अनुसार हैं। लेकिन जब हम इन दोनों शब्दों के मूल पर ग़ौर करें तो और अधिक स्पष्टता के साथ नबियों आने का उद्देश्य मालूम हो जाता है लेकिन इसके समझने से पहले यह बात समझ लेनी चाहिए कि अरबी भाषा की विशेषताओं में से यह एक अद्भुत विशेषता है कि इसमें केवल शब्दों के अर्थ ही नहीं होते बल्कि वर्णाक्षरों के भी होते हैं और इसी तरह यह कि इस भाषा में जो शब्द किसी ख़ास चीज़ के लिए बनाया गया हो वह केवल उस चीज़ के लिए पहचान के तौर पर नहीं होता बल्कि उस चीज़ का वह नाम किसी सम्बन्ध के कारण रखा जाता है और वह नाम ही बता देता है कि उस चीज़ में वह कौन सी बात है जिसके कारण उसका यह नाम रखा गया है। उदाहरणतः उर्दू में एक लम्बी चीज़ को लम्बी कहेंगे, माँ को माँ कहेंगे, बाप को बाप कहेंगे तो इन शब्दों से तात्पर्य केवल वही चीज़ें होंगी। इनसे यह पता न लगेगा कि इनमें क्या विशेष बात है जिसके कारण उन्हें इस नाम से

विशिष्ट किया गया है और अगर हम इन शब्दों के स्थान पर दूसरे शब्द बदल दें हमारे मतलब में कमी न आएगी उदाहरणत: लम्बी छोटी चीज़ को कहने लगें और छोटी लम्बी को, तो इससे उर्दू भाषा में कोई दोष न आएगा। लेकिन अरबी भाषा का यह हाल नहीं, इसमें अगर अरबी शब्द ''तवील'' को क़स्र कहने लगें तो यह किसी तरह जायज़ नहीं हो सकता क्योंकि अक्षर त व ल जिन अर्थों पर संकेत करते हैं अक्षर क़ स र उन पर नहीं करते। तात्पर्य यह कि दूसरी भाषाओं में तो चीज़ों के नाम केवल संकेत के तौर पर हैं अगर उनको बदलकर दूसरा शब्द रख दें तो कोई दोष नहीं पड़ता। लेकिन अरबी भाषा में हर एक नाम न केवल संकेत के तौर पर होता है बल्कि उस चीज़ की किसी ख़ास विशेषता पर संकेत करता है इसी कारण से एक शब्द के स्थान पर दूसरा नहीं रख सकते। अभी कुछ महीनों पहले यूरोप के युद्ध के बारे में ब्रिटेन के अख़बारों में एक अजीब सवाल उठा था जिसका कारण यह था कि जर्मन अफ़सरों और अंग्रेज़ अफ़सरों के युद्ध के तरीकों में फ़र्क़ था। जर्मन अफ़सर तो पीछे खड़े होकर अपनी फ़ौज को लड़वाते और अंग्रेज़ अफ़सर आगे होकर। इस पर यह सवाल उठाया गया कि इन दोनों तरीकों में से कौन सा तरीक़ा बेहतर है। अंग्रेज़ी अख़बारों ने लिखा कि हमारे अफ़सरों का ही तरीक़ा सही है क्योंकि इससे फ़ौज को यह मालूम होता है कि अफ़सर हमें मरवाना नहीं चाहते बल्कि खुद हमसे भी आगे रहते हैं। इस बहस को देखकर अरबी भाषा की ओर मेरा ध्यान गया और मैंने देखा कि अरबी भाषा ने अंग्रेज़ों के हक़ में फ़ैसला किया है। क्योंकि अरबी भाषा में फ़ौज के अफ़सर को क़ायद कहते हैं और यह शब्द क आ द से बना है जिसका अर्थ है किसी के आगे खड़े होकर या किसी जानवर की नकेल पकड़कर आगे-आगे चलना। अत: अरबी भाषा ने फ़ौजी अफ़सर

के लिए जो शब्द प्रयोग किया है उससे स्पष्ट होता है कि अफ़सर फ़ौज के आगे हो पीछे न हो। अंग्रेज़ी में जरनैल, करनैल इत्यादि शब्द हैं जो केवल संकेत के तौर पर निर्धारित कर दिए गए हैं। लेकिन अरबी भाषा ने ऐसा शब्द प्रयोग किया है जिससे उस अफ़सर के कर्तव्यों पर भी रोशनी पड़ती है। क़ायद के शब्द में एक यह भी विशेषता है कि वह सिपाहियों को इस तरह अपने हाथ में रखे जैसे लगाम से घोड़े को रखा जाता है अर्थात् फ़ौजी अफ़सर में दो बातें हों। प्रथम यह कि फ़ौज के आगे-आगे चले, द्वितीय यह कि सिपाहियों पर वह ऐसी पकड़ रखता हो और वे उसके ऐसे अधीन और आज्ञापालक हों जैसे ताक़तवर घोड़े लग़ाम के द्वारा क़ाबू में रहते हैं।

ख़ुदा तआला ने इस्लाम और ईमान के शब्द ही ऐसे प्रयोग किए हैं जो अपने अन्दर बड़ी-बड़ी विशेषताएँ रखते हैं। स ल म और अ म न इस्लाम और ईमान के मूल वर्णाक्षर हैं यह जहाँ इकट्ठे होंगे वहाँ उनके अर्थों में हिफ़ाज़त ज़रूर पाई जाएगी और यह एक अद्भुत विशेषता है कि ख़ुदा तआला ने अपने सच्चे दीन के लिए ऐसे शब्द प्रयोग किए हैं जो मज़हब के उद्देश्य को भी ज़ाहिर कर देते हैं हालाँकि और भी ऐसे शब्द थे जो मज़हब के लिए प्रयोग हो सकते थे मगर क़ुरआन शरीफ़ ने इस्लाम और ईमान के शब्द रखे हैं। इनके वर्णाक्षरों को चाहे जिस तरह बदलो उन सब हालतों में हिफ़ाज़त के अर्थ पाए जाएँगे। मूलतः स ल म (सलम) को ही ले लो और उसको बदलकर देख लो। उदाहरण के तौर पर इस्लाम शब्द है जिसका अर्थ है आज्ञापालन। हम देखते हैं कि जब कोई बड़े आदमी की आज्ञापालन करता है और उसकी बात मान लेता है तो दूसरों के अत्याचारों से बच जाता है और उसी के जान व माल की रक्षा की जाती है जो अधीन और आज्ञापालक होता है। अतः जो लोग बाग़ी होते

हैं सरकार उनकी रक्षा नहीं करती, पिछले ज़माने में तो ऐसे लोग आउट आफ़ लाज़ कहलाते थे और अगर कोई उनको क़त्ल कर देता तो भी सरकार उसे न पूछती थी। फिर अरबी भाषा में सलम ऐब और आफ़त से बचने को कहते हैं। इसी तरह अरबी लाक्य सल्लमल जिल्द का अर्थ है चमड़े पर सलम का रंग चढ़ा दिया और रंग चमड़े को गलने से बचाने के लिए करते हैं अतएव इसमें भी हिफ़ाज़त का अर्थ पाया जाता है। इसी तरह अरबी में कहते हैं सालमहू सालहहू अर्थात् उसने परस्पर सुलह की। सुलह करने में भी हिफ़ाज़त होती है। इसी तरह अरबी में कहते हैं तसल्लमल शैआ अर्थात् अमुक चीज़ को उसने पकड़ लिया और उस पर कब्ज़ा कर लिया और जब कोई चीज़ क़ब्ज़े में आ जाती है तो उसकी भी दूसरों से हिफ़ाज़त की जाती है। इसी तरह अरबी में इस्तलमज़्ज़रओ का मुहावरा है जिसका अर्थ है खेती ने दाना दबा लिया अर्थात् खेती में दाना पड़ गया, इसमें भी हिफ़ाज़त का अर्थ निहित है क्योंकि जब तक खेती में दाना न पड़े उस समय तक किसान उस पर संतुष्ट नहीं होता और जब दाना पड़ जाए तो फिर एक हद तक वह उसे सुरक्षित समझता है। इसके अतिरिक्त अरबी भाषा में सलाम ख़ुदा का एक नाम है जिसका अर्थ है हर एक दोष और अवगुण से रहित। फिर वर्णाक्षरों को और बदलते जाएँ तो स म ल (समल) बन जाएगा जिसका अर्थ सुलह कराना और हौज़ से गन्दगी निकालकर साफ़ करना है और अगर इनको बदलकर ल म स (लमस) कर दें तो इसका अर्थ है छूना। समस्त ज्ञान जो इन्सान प्राप्त करता है पाँच ज्ञानेन्द्रियों से करता है उनमें से एक लमस भी है। अरबी में "लमसल माओ" का अर्थ है पानी बह पड़ा। जब पानी बहकर खेती में पहुँचता है तो खेती की हिफ़ाज़त करता है और उसे सूखने से बचाता है। इसी तरह अगर इनको बदलकर ल स

म (लसम) कर दें तो इसका अर्थ चुप रहना है और यह कहावत मशहूर है कि- निकली होंठों चढ़ी कोंठों, हिफ़ाज़त और अमन जो चुप रहने में मिलता है उसे हर एक जानता है। इसी तरह म ल स (मलस) ख़ुशामद करने को कहते हैं और ख़ुशामद करने का हमेशा यही उद्देश्य होता है कि किसी के अत्याचार से चिकनी चुपड़ी बातें करके बचा जाए। यह मैंने इस्लाम शब्द के वर्णाक्षरों को आगे-पीछे बदल-बदलकर उनकी साझेदारी से जो शब्द बनते हैं उनके अर्थों को बयान किया है।

अब ईमान के बारे में बताता हूँ अरबी में "अनाम" सृष्टि को कहते हैं और किसी चीज़ का बन जाना ही उसकी हिफ़ाज़त का पहला उपाय होता है। अरबी शब्द "नअम" का अर्थ है बोलना और आवाज़ निकालना। बोलना जीवित होने का लक्षण समझा जाता है और इसी अर्थानुसार यह शब्द अरबी भाषा में प्रयोग होता है। अत: जो व्यक्ति मर जाए उसके बारे में अरबी में कहते हैं - "अस्कतल्लाहो नामतहू", जिसका शाब्दिक अर्थ यह है कि अल्लाह तआला ने उसकी आवाज़ बन्द कर दी, जिसका तात्पर्य यह है कि उसे मृत्यु दे दी। फिर अरबी में "मानल् क़ौम" का अर्थ है लोगों को खाना खिलाना। खाना भी बचाव का साधन है अगर कोई खाना न खाए तो मर जाए। इसी तरह अरबी में - "मानश्शैया" का अर्थ है उसके जितने पहलू हैं सब को पूरा और मुहैया कर लिया जाए। फिर – "माना फिल् अम्र" का अर्थ है बात को समझकर मस्तिष्क में बिठा लेना। इसी तरह अरबी में - "मानतुन", नाभि को कहते हैं जिसके द्वारा भ्रूण को खाना पहुँचता है और भ्रूण ज़िन्दा रहता है। इसी तरह "मनअल" जिल्द का अर्थ है चमड़े को रंगकर मज़बूत करना। तात्पर्य यह कि-सीन, लाम,मीम और अलिफ़, मीम, नून, यह तीनों अक्षर आगे-पीछे होकर जिस तरह भी आएँ उनके अर्थ हिफ़ाज़त के ही होते हैं। अतएव इस्लाम और ईमान का अर्थ

यह हुआ कि ऐसे कर्म करना जिनसे इन्सान तबाही से बच जाए। इसलिए ख़ुदा तआला ने अपने सच्चे मज़हब के नाम के लिए ऐसे शब्द रखे हैं कि उनमें ही मज़हब का असल उद्देश्य बता दिया है। जिसका दूसरे शब्दों में अर्थ यह है कि ख़ुदा तआला के प्रकोप से लोग बच जाएँ और आपस के लड़ाई-झगड़ों से लोग मुक्ति पा जाएँ। जब हम क़ुरआन करीम पर ग़ौर करते हैं तो क़ुरआन करीम से इस्लाम की यही परिभाषा मालूम होती है।

क़ुरआन की शिक्षा -

मोमिन के कर्तव्य क़ुरआन करीम ने यही बयान फ़रमाए हैं। जैसा कि फ़रमाया

اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآئِ ذِی الْقُرْبٰی وَيَنْهٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ ۚ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ

(अन्नहल - 91)

अल्लाह तुम्हें अद्ल करने का आदेश देता है। अद्ल उस न्याय को कहते हैं जिसमें न कमी पाई जाए न ज़्यादती, फिर एहसान करने का आदेश देता है अर्थात् केवल यह नहीं कि इन्सान जिस तरह अपनी चीज़ों को महफ़ूज़ रखता है उसी तरह दूसरों की चीज़ों को रखे बल्कि मुहताज को अपनी चीज़ें दे। यहाँ ख़ुदा तआला ने किसी मुसलमान, हिन्दू, ईसाई इत्यादि की शर्त नहीं लगाई कि तुम अमुक को दो और अमुक को न दो, बल्कि सर्वव्यापक रूप से कह दिया कि अल्लाह तुम्हें आदेश देता है कि चाहे कोई किसी धर्म से सम्बन्ध रखता हो उससे न्याय करो अर्थात् जिस तरह तुम यह पसन्द नहीं करते कि कोई तुम्हारे धन को छीन ले या तुम्हारी इज़्ज़त पर हमला करे या तुम्हें किसी प्रकार का नुकसान पहुँचाए उसी तरह तुम भी किसी के साथ न करो। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया-

لا یومنوا احدکم حتیّٰ یُحبَّ لِاَخیہِ ما یُحبُّ لِنفسہ

(بخاری کتاب الایمان باب من الایمان ان یحبّ لاخیہ مایحبّ لنفسہ)

कि तुम में से उस समय तक कोई मोमिन नहीं हो सकता जब तक अपने भाई के लिए वही कुछ न पसन्द करे जो अपने लिए करता है। अतएव मोमिन बनने के लिए यह शर्त रखी गई है कि जिसके कष्ट से सारी दुनिया महफ़ूज़ रहे और जिस तरह वह अपने लिए यह पसन्द नहीं करता कि कोई उसको धोखा दे, वह भी किसी के साथ न करे और जिस तरह वह अपने लिए यह पसन्द नहीं करता कि कोई उसकी ग़ीबत करे, कोई उसके सामने झूठ बोले, कोई उसे नुकसान पहुँचाए। इसी तरह वह भी किसी से इस तरह का व्यवहार न करे। फिर ख़ुदा तआला केवल अद्ल का ही आदेश नहीं देता बल्कि कहता है कि जिस किसी का हक़ देना है तो उससे बढ़कर दो, और दूसरों को केवल बुराई से ही न बचाओ बल्कि नेकियों की नेमत से मालामाल कर दो, फिर फ़रमाया –

وَاِیْتَآئِ ذِی الْقُرْبٰی (ईताय ज़िलक़ुर्बा)

करो, अर्थात् जिस तरह माँ बच्चे से बिना किसी स्वार्थ के मुहब्बत करती है, उसी तरह तुम्हारा सब से सुलूक होना चाहिए और यह सब कुछ किसी से नेकी और एहसान की उम्मीद रखकर नहीं करना चाहिए। फिर अल्लाह ऐसे कामों से मना करता है जो अश्लील, अभद्र और नापसन्दीदा हैं चाहे वे स्वयं या अपनों से सम्बन्धित ही क्यों न हों। फिर मुन्कर से मना करता है अर्थात् ऐसी बातों से जो नापसन्दीदा हैं चाहे वे अपने लिए हों या दूसरों के लिए। फिर बग़्य से मना करता है अर्थात् ऐसी बुराई से जो अपने अन्दर पैदा होकर दूसरों पर भी असर ड़ालती है और उससे दूसरे लोगों को भी नुकसान पहुँचता है, इन सारी प्रकार की बुराइयों से अल्लाह मना करता है। तात्पर्य यह कि मोमिन की परिभाषा क़ुरआन करीम ने यह बताई

है कि पहले तो वह दूसरों के साथ ऐसा सुलूक करे जैसा कि वह पसन्द करता है कि लोग उसके साथ करें और दूसरों का हक़ न दबाए और किसी को नुकसान न पहुँचाए। लोगों के हक़ पूर्णतः अदा करे। दूसरे यह कि न केवल उनके हक़ अदा करे बल्कि और ज़्यादा एहसान करे। तीसरे यह कि एहसान करना उसकी आदत बन जाए और वह अपनी आदत से मज़बूर होकर एहसान करे और ऐसे तमाम् कामों से भी बचे जो बुरे हों। फिर ऐसे कामों से भी बचे जो लोगों की नज़रों में नापन्दीदा हों और उनसे भी जिनमें किसी दूसरे पर ज़ुल्म होता हो। यह आदेश तो मानवजाति की रक्षा और सुलूक के सम्बन्ध में था। अब रूह शेष रहती है इसके बारे में किसी ख़ास आयत के प्रस्तुत करने की जरूरत नहीं। क़ुरआन शरीफ़ का हर पेज, हर रुकूअ, हर पंक्ति ख़ुदा तआला की महानता और प्रताप की द्योतक है। यूरोप का एक लेखक लिखता है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने अपनी किताब (क़ुरआन) में ख़ुदा का इतना गुणगान किया है कि मालूम होता है (नऊज़ बिल्लाह) उसे ख़ुदा का जुनून है। यह चूँकि ईसाई है इसलिए उसने क़ुरआन को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की लिखी हुई किताब बताकर ज़ाहिरी तौर पर एक नतीजा निकाल लिया कि उसे ख़ुदा का जुनून मालूम होता है। लेकिन अध्यात्मज्ञान रखने वाले लोग इस बात से और ही नतीजा निकालते हैं। अतः क़ुरआन शरीफ़ ने नबियों के आने का यह उद्देश्य बताया है कि वे आकर ख़ुदा के प्रकोप से लोगों को बचाएँ और उनको आपस के कष्ट और नुकसान से बचाएँ और उन्हें अल्लाह तआला के साथ मुहब्बत करने का ढंग बताएँ। हर एक नबी इन्हीं उद्देश्यों को लेकर आता है। अब तुम अपने दिलों में सोच लो कि नबी की शिक्षाओं पर जहाँ पालन किया जाए वहाँ कितना सुख और चैन मिल सकता है। अगर दुनिया नबियों की शिक्षाओं पर चलने लगे तो न

पुलिस की आवश्यकता रहती है, न पहरेदारों की, न फ़ौज की, न यौद्धिक हथियारों की, क्योंकि मोमिन का अर्थ ही यही है कि ऐसा इन्सान जिसमें किसी प्रकार की बुराई और बेहयाई न हो और आज्ञापालन की विशेषता अपने अन्दर रखता हो।

नबी और फ़लास्फ़र में अन्तर –

नबी दुनिया में सब से बड़ा सुधारक होता है। बड़े-बड़े फ़लास्फ़र गुज़रे हैं मगर नबियों से उनकी समानता नहीं दी जा सकती। क्योंकि जिस तरह नबियों ने सुधार किया है उस तरह वे नहीं कर सके। बू अली सीना के बारे में लिखा है कि उसे एक शिष्य ने कहा कि अगर आप नबूवत का दावा करते तो क्या ही अच्छा होता। आप को यह दावा सजता है। मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने (नऊज़ुबिल्लाह) यूँ ही दावा कर दिया, वह तो अनपढ़ था। यह सुनकर बू अली सीना चुप रहा और कुछ उत्तर न दिया। एक दिन सर्दी का मौसम था। उसने तालाब में जिसका पानी सर्दी के कारण जम रहा था, उसी शिष्य को उसमें छलाँग मारने के लिए कहा। उसने इन्कार कर दिया और कहा, क्या आप जानते नहीं कि सर्दी का मौसम है पानी में छलाँग मारने से सुन्न हो जाऊँगा। आज आपको कुछ हो तो नहीं गया। बू अली सीना ने कहा, मूर्ख क्या तूने इसी निष्ठा से कहा था कि अगर तू नबूवत का दावा करता तो सही होता। क्या तू नहीं जानता कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने एक को नहीं, दो को नहीं बल्कि हज़ारों को हुक्म दिया कि अपनी जानों को लड़ा दो। तो वे अपनी बीवी, बच्चे, सगे-सम्बन्धी और धन-दौलत सब कुछ छोड़कर चले गए और जान जाने की कुछ भी परवाह न की। वे बिना तनख़्वाह के पुलिस,फ़ौज और मजिस्ट्रेट बन गए। अपना ख़र्च

करते और दुनिया की हिफ़ाज़त करते, अपनी जानें क़ुर्बान करते और दुनिया को तबाह होने से बचाते। अत: नबियों का काम साबित करता है कि सच में वे नबी हैं। फ़लास्फ़र समाज-सुधार का दावा तो कर देते हैं मगर उनके काम में कामयाबी नहीं होती। बहुत से ऐसे होते हैं जो कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं, लेकिन नबी दुनिया की हिफ़ाज़त और सुधार के लिए आया करता है।

शरीअत का उद्देश्य -

शरीअत भी लोगों की हिफ़ाज़त और सुधार का एक साधन होती है। लेकिन उन पर बड़ा अफ़सोस है जिन्होंने इस पर ग़ौर नहीं किया और कहते हैं कि शरीअत लानत है। इन्सान चूँकि कमजोर है इसलिए उन्हें यह ग़लती लगी है कि इन्सान शरीअत पर अमल नहीं कर सकता,इसलिए लानत है। लेकिन उन्होंने इसे समझा ही नहीं। शरीअत गाइड बुक और हिदायत के तौर पर होती है और नबी हादी और रहनुमा होता है आप लोग जानते हैं कि हिदायतनामा या गाइड बुक कभी भटकने का कारण नहीं हो सकती। अगर किसी किताब में लाहौर पहुँचने का रास्ता लिखा हो और उसमें अजायबघर, लारेन्स हाल, चिड़ियाघर इत्यादि जगहों के पते दर्ज हों या जैसे आयुर्वेद की किताबों में लिखा होता है कि अमुक ज़हर न खाना और अगर कोई उसे खा ले तो उसके असर को दूर करने के लिए अमुक दवा है इत्यादि इत्यादि, तो क्या ऐसी किताबें सुख और आराम का साधन हुआ करती हैं या दु:ख का। इसी तरह शरीअत है कि जो कष्ट और मुसीबतें लोगों पर आती हैं उसमें उनसे बचने के उपाय बताए जाते हैं और जो मुसीबतें आ चुकी हों उनको दूर करने के उपाय भी समझाए जाते हैं। क़ुरआन शरीफ़ में अल्लाह तआला फ़रमाता है:-

يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَيَهْدِيَكُمْ سُنَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَيَتُوْبَ عَلَيْكُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ وَاللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْكُمْ وَيُرِيْدُ الَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الشَّهَوٰتِ اَنْ تَمِيْلُوْا مَيْلًا عَظِيْمًا ۝ (अन्निसा - 27-28)

अल्लाह ने चाहा है कि तुम्हारे लिए अच्छी तरह खोलकर बयान कर दे कि अमुक काम करोगे तो फ़ायदा उठाओगे और अमुक काम करोगे तो नुकसान। तुम से पहले भी कुछ क़ौमें गुज़री हैं उनमें से कुछ ने अपने कर्मों के कारण सुख पाया था और कुछ ने अपने कर्मों के कारण दुःख उठाया। ख़ुदा चाहता है कि उनके हालात तुम्हें खोल-खोलकर सुना दे, और उन लोगों का रास्ता तुमको भी बता दे जो तबाहियों से बच गए, क्योंकि अल्लाह उनके हालात को अच्छी तरह जानने वाला और उन हालात के सुनाने की हिकमत को समझने वाला है। अल्लाह चाहता है कि तुम पर अपनी रहमत करे और वे लोग जो अपनी ही इच्छाओं के वशीभूत हैं वे चाहते हैं कि एक ही ओर सारे के सारे झुक जाएँ अर्थात् सारे पहलुओं की ओर ध्यान न दें, अगर भोग-विलास में पड़े हैं तो उसी में पड़े रहें। अगर मार-काट करने लगें तो उसी में लगे रहें। ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि ऐसा नहीं होना चाहिए, हम तुम्हें ऐसी शिक्षा देते हैं जिसके द्वारा इन्सान सारे पहलुओं पर नज़र रख सकता है। भोग-विलास पर चलने वाले कभी सारे पहलुओं पर ध्यान नहीं दे सकते, ऐसे आदमी एक तरफ़ झुक जाते हैं। उन्हें अगर किसी पर ग़ुस्सा आता है तो चाहते हैं कि पीसकर रख दें और अगर मुहब्बत करते हैं तो कहते हैं सब कुछ क़ुर्बान कर दें। ख़ुदा तआला कहता है कि इन्सान को हम यह बताना चाहते हैं कि अमुक अवसर पर इस तरह काम करो और अमुक अवसर पर इस तरह, ताकि किसी काम में हद से बढ़ने की वजह से नुकसान

न उठाओ। क़ुरआन शरीफ़ पुनः फ़रमाता है :-

يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّخَفِّفَ عَنْكُمْ ۚ وَخُلِقَ الْاِنْسَانُ ضَعِيْفًا

(अन्निसा - 29)

अल्लाह यह चाहता है कि तुम्हारे बोझों को कम कर दे, अर्थात् शरीअत का उद्देश्य यह है कि इन्सान के बोझ को हल्का किया जाए, न यह कि जो कुछ लोग सोचते हैं कि शरीअत एक जकड़बन्द है। शरीअत कोई बोझ नहीं,बल्कि एक गाइड बुक है। चूँकि इन्सान कमज़ोर था और अल्लाह पूर्णतः जानता था कि अगर उसे कोई गाइड बुक न दी गई तो बड़े-बड़े नुकसान उठाएगा और बड़े-बड़े तजुर्बों और नुकसान उठाने के बाद किसी चीज़ को नुसानदेह और किसी चीज़ को फ़ायदेमन्द ठहराएगा। अतः उसने शरीअतों और नबियों को इसीलिए भेजा। शरीअत और नबी दुनिया में लोगों के मध्य मेल-मिलाप और शान्ति पैदा करने के लिए आते हैं। यही वह शिक्षा है जिसको सारे नबी लेकर आए और यही इस ज़माने में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम लेकर आए। आपका यही मिशन था कि ख़ुदा तआला के साथ लोगों का मज़बूती से सम्बन्ध जोड़ें और बन्दों का बन्दों से आपस में ऐसा रिश्ता जोड़ दें कि दुश्मनी और ईर्ष्या-द्वेष कुछ भी बाक़ी न रहे। सारे नबी इन्हीं कामों के लिए आते रहे हैं।

नबियों के काम -

अल्लाह तआला ने एक और जगह नबियों के काम की व्याख्या की है हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम दुआ करते हैं कि हे इलाही मक्का वालों में एक नबी पैदा कर और उसका काम यह हो कि

يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِكَ

(यत्लू अलैहिम् आयातिका)

तेरी तरफ़ से जो उसे दलाइल (तर्क) मिलें उन्हें सुनाए

وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ

(व युअल्लिमो हुमुल किताब वल् हिकमत)

और उन्हें किताब और हिकमत सिखाए

وَيُزَكِّيْهِمْ

(व युज़क्कीहिम)

और उन्हें पाक करे

اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ (अल बक़रह - 130)

(इन्नका अन्तल अज़ीज़ुल हकीम)

निःसन्देह तू बड़े प्रभुत्व और बड़ी हिकमत वाला है। अतः यह नबियों के काम हैं। जिस तरह नबी के पैदा होने का ज़माना वह होता है जिसमें दुनिया दुःखों और मुसीबतों में पड़ी होती है। उसी तरह नबी के आने का वह ज़माना होता है जिसमें लोग ख़ुदा तआला से नाता तोड़ चुके होते हैं और आपस में लड़ाई-झगड़े शुरू कर देते हैं। ऐसा कभी नहीं हुआ कि मेल-मिलाप,अमन और ख़ुदापरस्ती के ज़माने में कोई नबी आया हो। लेकिन जब उपद्रव, अन्धकार और अत्याचार बढ़ जाए तो आवश्यक है कि उस समय नबी आए और उस उपद्रव और अन्धकार को दूर करे।

लोगों के अन्दर लड़ाई-झगड़े के कारण -

लड़ाई-झगड़ों के सम्बन्ध में यह बात खूब याद रखो कि उनका कारण कंजूसी और पस्तहिम्मती है। लोग अपनी शक्तियों को भुला देते हैं और छोटी-छोटी बातों पर लड़ने लग जाते हैं। जिन लोगों के हौसले बुलन्द होते हैं उनका ख़ुदा तआला से भी बड़ा सम्बन्ध होता है। जिनके

हौसले पस्त हो जाते हैं ऐसे लोगों के बारे में ख़ुदा तआला फ़रमाता है (बनी इस्राईल - 95) اَبَعَثَ اللّٰہُ بَشَرًا رَّسُوۡلًا

मानो उन्होंने इन्सान को ऐसा नीच और निकम्मा समझ रखा है कि कहते हैं भला इन्सान ख़ुदा का रसूल हो सकता है यह तो बहुत मुश्किल बात है। उस ज़माने में लोगों के हौसले बहुत गिर जाते हैं। अतः ऐसे ही ज़माने में नबी का प्रादुर्भाव होता है। नबी आकर उनके हौसले बढ़ाता है और उनकी बड़ी-बड़ी सलाहियतें उजागर करता है। यहाँ तक कि जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आए तो आप को इन्सानी हौसला को चरमोत्कर्ष तक पहुँचाने का सौभाग्य प्रदान किया गया और कहा गया कि तू कह दे कि

قُلۡ اِنۡ کُنۡتُمۡ تُحِبُّوۡنَ اللّٰہَ فَاتَّبِعُوۡنِیۡ یُحۡبِبۡکُمُ اللّٰہُ

(अले इमरान - 32)

हे लोगो! तुम तो यह ऐतराज करते हो कि एक इन्सान किस तरह रसूल बन सकता है लेकिन ख़ुदा तआला ने मुझे वह कुछ सिखाया है कि अगर तुम मेरे बताए हुए आदेशों पर चलोगे तो ख़ुदा के प्रिय बन जाओगे और वह तुमसे प्यार करने लगेगा। यह इन्सान की तरक़्क़ी का वह सबसे ऊँचा दर्जा है जिसे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के द्वारा ख़ुदा तआला ने दुनिया के सामने पेश किया। लेकिन जो भी नबी आता रहा उसका बड़ा काम यही रहा कि लोगों को कंजूसी से बचाए। अतः नबी इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए बहुत से तरीक़े अपनाते रहे हैं जिनमें से एक ज़कात व सदक़ा का आदेश भी है। इस्लाम ने तो यहाँ तक सावधानी बरती है कि ज़कात की अदायगी हाकिमों के द्वारा रखी है कि वही लेकर पात्रों को दें, ताकि ज़कात देने वाले का लेने वाले पर कोई एहसान न हो और उसे उससे दबना न पड़े। इस तरीक़े से इस्लाम ने कंजूसी को

जड़ से उखेड़ दिया है। क़ुरआन करीम से मालूम होता है कि नबी ऐसे ही समय में आते हैं जब क़ौम में कंजूसी पैदा हो जाती है,क्योंकि कंजूसी ही तमाम् झगड़ों और फ़सादों की जड़ होती है। अगर किसी इन्सान के दिल में यह बीमारी न हो तो वह कभी झगड़ा –फ़साद न करे। जब लोग मेल-मिलाप और अमन से रहें तो नबियों के आने की कोई आवश्यकता नहीं रहती। अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की क़ौम की एक घटना क़ुरआन शरीफ़ में बयान की है कि किस तरह वह कंजूसी की तरफ़ झुक गई थी और हज़रत मूसा उनको उच्च विचारों की ओर ले जा रहे थे। जिसमें बताया गया है कि नबी ऐसी क़ौम में पैदा होता है जो हीन भावनाओं से भरी होती है और उसका काम उसको उस दलदल से निकालना होता है अतः फ़रमाया :-

وَاِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نَّصْبِرَ عَلٰى طَعَامٍ وَّاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ مِنْۢ بَقْلِهَا وَقِثَّآئِهَا وَفُوْمِهَا وَعَدَسِهَا وَبَصَلِهَا ؕ قَالَ اَتَسْتَبْدِلُوْنَ الَّذِيْ هُوَ اَدْنٰى بِالَّذِيْ هُوَ خَيْرٌ ؕ اِهْبِطُوْا مِصْرًا فَاِنَّ لَكُمْ مَّا سَاَلْتُمْ ؕ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ ۗ وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ۝

(अल बक़रह - 62)

इस आयत में इस बात का वर्णन किया गया है कि जब हज़रत मूसा की क़ौम एक लम्बे समय तक फ़िरऔनियों के अधीन रहकर पस्तहिम्मत हो गई और उनकी सोच बहुत गिर गई तो उनमें हज़रत मूसा नामक एक नबी पैदा हुआ और वह उनको वहाँ से निकालकर

मुल्क शाम की हुकूमत दिलाने के लिए लाया। चूँकि उस क़ौम के हौसले बहुत पस्त थे इसलिए उनका हौसला बढ़ाने के लिए उनको एक जंगल में रखा गया,ताकि दूसरी क़ौमों से अलग रहकर मूसा की शिक्षाओं का असर अपने दिल में पैदा करें और एक लम्बे समय तक की ग़ुलामी के दुष्प्रभाव से जो कंजूसी उनमें पैदा हो गई थी उसे दूर करें। अतः उन्हें आदेश दिया गया कि कोई काम काज न करो, शिकार और जंगल की खुम्बियाँ खाओ। कुछ समय के पश्चात् उन्होंने कहा कि हम इस एक खाने पर सब्र नहीं कर सकते, प्याज़, लहसुन, मसूर, गेहूँ इत्यादि हो तो हम खाएँ। अल्लाह ने उन्हें कहा, क्या तुम तुच्छ दर्जे की चीज़ों के बदले में उच्च दर्जे की चीज़ों को छोड़ना चाहते हो इसका यह अर्थ नहीं कि गोश्त कोई ऐसी चीज़ है जिसके होते हुए सब्ज़ी का माँगना गुनाह बन जाता है। यह तो हम मानते हैं कि गोश्त सब्जी की अपेक्षा उच्च दर्जा रखता है,आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी इसे सब्ज़ी की अपेक्षा उच्च दर्जे का बयान फ़रमाया है। लेकिन यह नहीं मानते कि अगर कोई सब्ज़ी के मुक़ाबले में गोश्त को निम्न स्तर का ठहराए तो वह ख़ुदा के समक्ष दण्डनीय समझा जाए। अतः यहाँ जो अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि उन्होनें ऊँचे दर्जे की चीज़ को नीचे दर्जे की चीज़ पर प्राथमिकता दी। इसलिए हमने कहा चले जाओ किसी शहर में उसमें तुम्हें जो माँगते हो मिल जाएगा और उन पर रुसवाई तंगदस्ती डाल दी गई और वे अल्लाह की नाराज़गी लेकर चले गए। इसका यह अर्थ है कि उनको मुल्क शाम की हुकूमत देने का वादा था और जंगल में उन्हें इसलिए रखा गया था कि उनकी कंजूसी दूर हो जाए और वे इस योग्य हो जाएँ कि हुकूमत कर सकें और उनके स्वभाव में आज़ादी का साहस और बुलन्द हौसला पैदा हो

जाए। लेकिन उन्होंने हुकूमत की बजाए सब्ज़ियों और तरकारियों अर्थात् खेतीबाड़ी को पसन्द किया और हुकूमत की क़द्र न की, इसलिए दण्ड के पात्र ठहर गए और उन पर ख़ुदा का प्रकोप भड़का। उन निम्नस्तर चीज़ों की ओर उनके झुकाव का कारण यह था कि उन्हें अल्लाह की बातों पर ईमान न था और यह विश्वास न होता था कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का वादा सच्चा होगा और उस ईमान की कमी का कारण उनका नबियों से अकारण झगड़ना था और नबियों से उनके झगड़ने का कारण उनके दुष्कर्म और दुराचार थे। नबी दुष्कर्म और दुराचारों से उनको रोकते थे और वे रुकना नहीं चाहते थे। इस आयत से पूरी तरह स्पष्ट हो जाता है कि नबियों का प्रादुर्भाव कैसे समय में होता है और वे किस तरह लोगों के हौसलों को बुलन्द करना चाहते हैं और कंजूसी से निकालकर उच्च शिष्टाचार की ओर ले जाते हैं और जो नबी को छोड़ते हैं वे कंजूसी और कमीनगी की तरफ़ झुकते हैं। यहाँ तक कहने लग जाते हैं कि क्या हम पर बहुत बड़ी कृपा हो सकती है? मैंने अभी यह आयत पढ़ी है कि

(अल जुमअः - 3) هُوَ الَّذِیۡ بَعَثَ فِی الۡاُمِّیّٖنَ رَسُوۡلًا

वही ख़ुदा है जिसने अनपढ़ों में रसूल भेजा और उन्हीं में से भेजा। इससे मालूम होता है कि उन लोगों को बहुत आश्चर्य हुआ कि भला हम में से कोई रसूल हो सकता है? कदापि नहीं हम तो अनपढ़ हैं। लेकिन ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि हमने अनपढ़ों से ही एक को नबी बना दिया है। इसी तरह जब यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का देहान्त हो गया तो लोगों ने कहा कि अब कोई नबी कहाँ से आएगा अर्थात् अब कोई नबी नहीं आ सकता। यह बात पस्तहिम्मती और कंजूसी से पैदा होती है,फिर उससे आपस में लड़ाई और झगड़े शुरू हो जाते हैं और ख़ुदा

तआला से लोगों के सम्बन्ध टूट जाते हैं। इस ज़माने में भी लोगों की यही हालत हो गई थी। इसीलिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आए और आकर पुकारा कि मैं इसलिए आया हूँ कि ख़ुदा से तुम्हारा सम्बन्ध कराऊँ और तुम में परस्पर मेल-मिलाप और मुहब्बत पैदा कर दूँ। ख़ुदा तआला से सम्बन्ध जोड़ने और दुनिया में मेल-मिलाप और शान्ति स्थापित करने के लिए नबी एक जमाअत पैदा करते हैं और वह जमाअत ऐसी हुआ करती है जो किसी बात को आँख बन्द करके नहीं मानती बल्कि हर एक बात को दलील से मानती है। ख़ुदा, क़यामत, फ़रिश्ते, दण्ड और प्रतिफल, जन्नत, दोज़ख़ इत्यादि हर एक बात को दलीलों से मानती है। लेकिन उस जमाअत के बाद जब लोगों में पस्तहिम्मती पैदा हो जाती है तो वे नबियों की बातों की परवाह नहीं करते और उनकी जो आस्थाएँ होती हैं उनके सबूत में उनके पास कोई दलील नहीं होती, बल्कि रस्मोरिवाज का नाम ही धर्म रख लेते हैं। आप लोग अगर इस ज़माने के मौलवियों से पूछें कि ख़ुदा तआला के सुबूत में आप के पास क्या प्रमाण हैं तो अधिकतर कुछ जवाब न दे सकेंगे और उल्टा यह कहने लग जाएँगे कि तुम ख़ुदा का सुबूत माँगते हो,क्या नास्तिक हो गए हो? अगर क़ुरआन शरीफ़ की किसी आयत के बारे में पूछा जाए तो कह देंगे कि क्या तुम्हें क़ुरआन शरीफ़ पर ईमान नहीं है जो ऐतराज़ करते हो ऐसा कहना तो कुफ़्र है। यही हाल हिन्दुओं का है। लेकिन नबी की बनाई हुई जमाअत हर बात के लिए दलीलें रखती है। क्योंकि नबी हर एक बात के लिए दलीलें प्रस्तुत करता है। अत: जिन लोगों ने हमारी जमाअत की किताबें पढ़ी हैं उन्हें यह बात अच्छी तरह मालूम होगी। मैं पूरे दृढ़ विश्वास से कहता हूँ कि हमारी जमाअत के ८०-90 प्रतिशत बल्कि उससे भी अधिक ऐसे

लोग होंगे जो यह कह सकते हैं कि हम ख़ुदा को इसलिए मानते हैं कि हमारे पास उसकी हस्ती के सम्बन्ध में यह-यह सुबूत हैं। इस्लाम को इसलिए स्वीकार किया है कि उसकी सच्चाई की अमुक-अमुक दलीलें हैं। लेकिन अगर दूसरे लोगों से पूछा जाए तो उनमें से बहुत ही कम ऐसे होंगे जो कोई सुबूत दे सकें। अभी कल ही की बात है कि एक नवजवान जो मुझे बहुत प्रिय हैं और ग्रेजुएट हैं, मैंने उनसे पूछा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के रसूल होने का आपके पास क्या सुबूत है। तो उन्होंने कहा, कि मैंने सोचा नहीं है। इसी तरह अगर किसी हिन्दू से पूछें कि आपके मज़हब का क्या सुबूत है? तो उसका यही जवाब होगा कि मैं हिन्दुओं के घर में पैदा हुआ हूँ इसलिए हिन्दू हूँ। यही हाल दूसरे धर्मों के लोगों का है। अतः नबी का यह काम होता है कि रस्मोरिवाज के ईमानों से निकालकर सच्ची बातों की तरफ़ ले आता है। इसके बाद नबी का दूसरा काम यह होता है कि

وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ

(युअल्लिमोहुमुल किताब)

लिखने-पढ़ने की शिक्षा देता है, इसमें शिक्षा भी शामिल है और शरीअत भी।

وَالْحِكْمَةَ

(वल् हिकमत्)

फिर हर एक शरीअत के आदेश की वास्तविकता और उसका कारण भी बताता है। इस समय अक्सर लोग नहीं जानते कि नमाज़ क्यों पढ़ी जाती है, तपस्या क्यों की जाती है, गिरजा में क्यों जाया जाता है। लेकिन क़ुरआन शरीफ़ में ख़ुदा तआला ने हर एक हुक्म की वजह बता दी है कि नमाज़ इसलिए पढ़ो, रोज़ा इसलिए रखो, शराब इसलिए न

पियो, व्यभिचार इसलिए न करो, जुआ इसलिए न खेलो। फिर नबी का अगला काम यह होता है कि

(व युज़क्कीहिम) وَيُزَكِّيهِمْ

वह उनको अच्छे कामों का आदेश देता है और उनमें हौसला और उच्च विचार पैदा करता है। अतः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक काम तो यह था कि एक दीनदार जमाअत पैदा कर दें और एक दूसरा काम था जो आप से नहीं बल्कि आपकी पैदा की हुई जमाअत से सम्बन्ध रखता था। ख़ुदा तआला के रसूल न केवल एक ऐसी जमाअत तैयार करते हैं जो हर तरह से श्रेष्ठ और उच्च आदर्शों वाली हो बल्कि ऐसी भी हो जो दुनिया में सुलह और अमन फैलाए। अतः सब नबियों ने ऐसा ही किया और ऐसी जमाअतें तैयार कीं जो दुनिया में सुलह और शान्ति फैलाने का कारण हुआ करती हैं और जो बीज उन नबियों ने बोया था उसको पानी देकर उन्होंने एक बड़े वृक्ष तक पहुँचा दिया। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी अपनी उम्मत को विभिन्न क़ौमों में सुलह और शान्ति का आदर्श प्रस्तुत करने के लिए मदीना में दूसरी क़ौमों से सन्धियाँ कीं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी इसी उद्देश्य के लिए पैग़ाम-ए-सुलह नामक एक किताब लिखी,जो लाहौर में ही पढ़ी गई। जिसमें दूसरे धर्म के लोगों को इस ओर बुलाया गया कि हम आपके नबियों को मानते हैं और उन्हें बुरा नहीं कहते। इसलिए आप का भी कर्तव्य है कि हमारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सच्चा समझें और बुरा न कहें। आपने फ़रमाया कि अगर तुम इस तरह करो तो सुलह हो सकती है। क्योंकि झगड़े और फ़साद ईमान की वजह से नहीं होते,बल्कि बद्गोई और ग़ालियों की वजह से होते हैं। इसी तरह आपने मुनाज़रों (शास्त्रार्थों)

के बारे में यह प्रस्ताव प्रस्तुत किया कि अपने-अपने धर्म की विशेषताएँ बयान की जाएँ न कि एक-दूसरे के धर्म पर हमले किए जाएँ आप का यह पैग़ाम आप की जमाअत के लिए एक मार्गदर्शक है और इसके लिए आपने एक व्यवस्था बना दी कि इस नियम पर चलकर दुनिया में सुलह और अमन क़ायम करो। निःसन्देह आप स्वर्ग सिधार गए लेकिन आप का काम उतना ही था जो आपने किया। अनिवार्य था कि दूसरे नबियों की तरह आप भी एक सन्मार्ग दिखाकर परलोक सिधार जाते। अब हमारा काम है कि हम उस रास्ते पर चलकर लोगों को सुलह और अमन की ओर लाएँ। अगर इन तरीक़ों का पालन किया जाए जो आपने बताए हैं तो दुनिया में अवश्य अमन क़ायम हो सकता है। क्योंकि जहाँ नर्मी और सद्व्यवहार से काम किया जाता है वहाँ सुलह और शान्ति होती है और जहाँ सख़्ती की जाए वहाँ जुदाई हो जाती है चाहे आपस में कितनी ही मुहब्बत क्यों न हो। लेकिन अगर सख़्ती हो तो दुश्मनी और दुःख पैदा हो जाता है। अतः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का विभिन्न धर्मों के लोगों को इस तरफ़ बुलाना कि एक-दूसरे को गालियाँ देने के बजाए अपने मज़हब की विशेषताएँ बयान किया करो, वस्तुतः लोगों में अमन क़ायम करने के लिए रास्ता साफ़ करना था और इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए मैं आप लोगों के सामने खड़ा हुआ हूँ और चाहता हूँ कि भिन्न-भिन्न धर्मों के लोग सिख, हिन्दू, ईसाई, आर्य, सनातनी और ग़ैर अहमदी जो इस समय यहाँ मौजूद हैं इस बात पर ग़ौर करें कि आपस में गालियाँ देने से क्या फ़ायदा है। सच्चाई प्रकट करने के लिए गालियाँ देने की ज़रूरत नहीं। गालियों से दुश्मनी और ईर्ष्या-द्वेष बढ़ने और आपस में फ़साद होने के सिवा और कुछ हासिल नहीं होता, जिसका नतीजा यह होता है वह तरक़्क़ी जो

दीन और दुनिया में हम कर सकते हैं पीछे से पीछे ही होती जाती है। जबकि वही बातें जो सख़्ती और गाली गलौज से की जाती हैं नर्मी से भी कही जा सकती हैं, तो क्यों इस फ़ायदेमन्द तरीक़े को छोड़कर उन गन्दे तरीक़ों को अपनाया जाए जिनसे दीन और दुनिया का नुकसान है। दीन का तो इस तरह कि जब उसमें दुश्मनी पैदा हो जाए तो दूसरे की बात पर ग़ौर करने की ओर ध्यान ही नहीं पैदा होता और दुनिया का इस तरह कि उस फ़साद का कारण यह होता है कि एक ही देश में रहने वाली क़ौमें पास-पास रहने के बावजूद एक-दूसरे से इतना दूर रहती हैं कि उन फ़ायदों से जो मिलजुल कर कोशिशों से हासिल हो सकते हैं,वंचित रह जाती हैं। यह सोचना कि कुछ लोग इस मतभेद के बावजूद मिलजुल कर काम करते हैं सच नहीं है। क्योंकि अगर कुछ लोग अपने मज़हब को दिल से पसन्द न करने के कारण दूसरे की गालियों की भी कोई परवाह नहीं करते या मज़हब पर दुनियादारी को प्रधानता देते हैं तो उनकी हालत पर सबको एक जैसा समझ लेना सही नहीं। जब तक दो क़ौमों में अधिकता उन लोगों की न हो जो एक-दूसरे से नफ़रत की बजाए मुहब्बत रखते हों, उस समय तक उनमें सुलह नहीं हो सकती। थोड़े से लोगों की कोशिशें चाहे वे कितने ही बड़े पदाधिकारी ही क्यों न हों कभी फल नहीं ला सकेंगी,क्योंकि अक्सर लोग धर्म से मुहब्बत करने वाले होते हैं। इसलिए जब तक परस्पर धार्मिक द्वेष दूर न हों तब तक दो क़ौमों के मध्य कभी सुलह नहीं हो सकती। अतः पारस्परिक धार्मिक द्वेष दूर करने का एक ही मार्ग है कि एक-दूसरे को गाली गलौज करने से बचा जाए। अतः हिन्दुस्तान के वर्तमान मतभेदों और ईर्ष्या-द्वेषों को दूर करने के लिए यही एक ही उपाय है।

धार्मिक झगड़ों के रोकने का उपाय -

धार्मिक झगड़ों के रोकने का उपाय यह है कि एक-दूसरे को गालियाँ देना और बुरा-भला कहना बन्द कर दिया जाए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने वादा किया था कि अगर लोग हम पर कटुता करना छोड़ दें तो हम भी सख़्त भाषा का प्रयोग करना छोड़ देगें अन्यथा कभी-कभी सख़्ती का जवाब सख़्ती से ही देना पड़ता है। क्योंकि अगर जवाब न दिया जाए तो कुछ लोग समझते हैं कि इनके पास जवाब ही नहीं। अत: अगर विभिन्न धर्मों के लोग इस बात में हमारे साथ एक होने के लिए तैयार हो जाएँ तो मैं अपनी जमाअत की ओर से जो कई लाख लोगों पर आधारित है और जिसका मैं अकेला एक इमाम हूँ अपनी ओर से यह ऐलान करता हूँ कि जो लोग गालियों को छोड़कर नर्मी और सुलह की ओर एक क़दम बढ़ाएँगे तो मैं दस क़दम बढ़ाऊँगा और जो हमारी ओर एक हाथ बढ़ेगा हम उसकी ओर दस हाथ बढ़ेंगे। दूरी का कारण हमेशा कटुता और दिल दु:खाना ही होता है. अत: हमारे अपने अन्दर से ही जब एक फ़िर्क़े ने सख़्ती और गाली गलौज से काम लिया तो एकता के हज़ारों बिन्दुओं के बावजूद हमें उनसे अलग होना पड़ा। जब अपने ही गालियाँ दें तो उनसे दूरी हो जाती है, तो पराए तो फिर पराए ही हैं। लेकिन सोचना चाहिए कि इस फूट और लड़ाई झगड़े के कारण कितना फ़साद बढ़ रहा है और इसको दूर करने के लिए कितनी क़ुर्बानी की आवश्यकता है। एक तरफ़ इस फ़साद को रखो और दूसरी तरफ़ उस क़ुर्बानी को तो मालूम हो जाएगा कि फ़साद के मुक़ाबले में उस क़ुर्बानी की जो विभिन्न धर्मों के लोगों को देनी पड़ेगी कुछ भी तुलना नहीं। क्योंकि दूसरे धर्मों के बुज़ुर्गों को गालियाँ देने से किसी मज़हब को कोई फ़ायदा नहीं। उदाहरणत:अगर कोई हिन्दू

या आर्य आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को गाली दे तो उसे क्या फ़ायदा पहुँच सकता है। गाली तो ज़िन्दा का कुछ बिगाड़ नहीं सकती,मर चुके का क्या बिगाड़ेगी। फिर उस इन्सान का,जिसको ख़ुदा तआला ने निर्दोष और निष्पाप ठहराया क्या बिगड़ सकता है। उसको कुछ नुकसान नहीं पहुँचेगा। मगर इससे मुसलमानों के दिलों में ऐसा घाव हो जाता है कि कोई मरहम उसे ठीक नहीं कर सकता क्योंकि मुसलमान यह तो पसन्द कर लेंगे कि उनके सामने उनके बीवी-बच्चों को क़त्ल कर दिया जाए,उनकी धन-दौलत छीन ली जाए, उनकी गर्दनों पर कुन्द छुरी फेर दी जाए। लेकिन यह कभी पसन्द न करेंगे कि उस रसूल को जिसके द्वारा उन्हें हिदायत मिली उसे कोई बुरा शब्द कहा जाए। अतःजो व्यक्ति आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को गाली देता है इससे उसके मज़हब को या उसे कोई फ़ायदा नहीं पहुँच सकता। लेकिन उसके इस काम से मुसलमानों को उससे और उसके सहपंथियों से नफ़रत अवश्य हो जाएगी जिसका परिणाम भयानक होगा। इसी तरह अगर मुसलमान श्री रामचन्द्र जी या श्रीकृष्ण जी को गालियाँ दें तो उन महापुरुषों को कोई नुकसान नहीं पहुँच सकता, मगर इससे यह नतीजा अवश्य निकलेगा कि उनके देशवासियों के दिलों पर ऐसी चोट लगेगी कि जिसको कोई मरहम ठीक नहीं कर सकेगा और मुसलमानों को ख़तरनाक नुकसान पहुँचेगा। अतः कटुता और दूसरे धर्मों और उनके बुज़ुर्गों को गालियाँ देना या उनकी आलोचना करना एक ऐसा ख़तरनाक काम है कि जिसका अंजाम कभी अच्छा नहीं हो सकता। लेकिन सवाल यह है कि जो आदत इस समय हिन्दुस्तान के लोगों में पड़ चुकी है उसको कैसे दूर किया जाए? इसका जवाब यह है कि पलक झपकते ही इस काम का होना तो मुश्किल है। लेकिन मुश्किल

काम से घबड़ाना भी इन्सान का काम नहीं। इसलिए मेरे विचारानुसार इस समय इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए एक मज़हबी कान्फ्रेंस की जाए, जिसके जलसे साल में एक या दो बार हुआ करें। इन जलसों में विभिन्न धर्मों के अनुयायियों को अपने धर्म की विशेषताएँ बयान करने के लिए बुलाया जाए और दूसरे धर्मों पर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से हमला करने की कदापि अनुमति न हो। बल्कि हर एक वक्ता अपने वक्तव्य में निर्धारित विषयों के बारे में केवल वह शिक्षा प्रस्तुत करे जो उसके धर्म ने दी है या उस पर जो ऐतराज़ पड़ सकते हों उनका उत्तर दे दे। उसको यह अनुमति कदापि न हो कि दूसरे धर्मों पर हमला करे या उनके बुज़ुर्गों का अपमान करे। यह कोशिश न केवल विभिन्न धर्मों के अनुयायियों के लिए कल्याण का कारण होगी, बल्कि अंग्रेज़ी सरकार की भी एक सेवा होगी। क्योंकि देश में अमन हो तो सरकार भी स्वतन्त्र होकर अपनी सुधार सम्बन्धी योजनाओं पर काम कर सकती है। क्योंकि मुल्क में उपद्रव सरकार के लिए सबसे अधिक कष्टदायक होता है। इसलिए ऐसी कोशिश न केवल देश की सेवा है बल्कि सरकार की भी सेवा है। मेरे निकट वे सरासर ग़लती पर हैं जो यह सोचते हैं कि गवर्नमेन्ट की सफलता विभिन्न क़ौमों की फूट में है। न यह सोच सही है और न ही अंग्रेज़ी सरकार की कार्यशैली इसकी पुष्टि करती है और न ही बुद्धि इसका समर्थन। इसलिए इस काम को जितनी जल्द हो सके शुरू किया जाए। जब यह काम शुरू हो जाएगा तो आशा है कि लोग धीरे-धीरे स्वयं इस उपाय की विशेषता को स्वीकार कर लेंगे और अगर पहले हमारे साथ शामिल न होते थे तो बाद में हो जाएँगे। नि:सन्देह इस काम के रास्ते में बहुत सी मुश्किलें हैं, लेकिन कौन सा काम है जिसके रास्ते में मुश्किलें नहीं होतीं। प्रारम्भ में अवश्य कुछ

लोग विरोध करेंगे, लेकिन अन्ततः इसमें सफलता अवश्य मिलेगी। क्योंकि जब अनुभव से पता लग जाएगा कि यह तरीका नेकी और भलाई का तरीका है तो जो लोग इसके विरोधी होंगे वे भी इसे अवश्य स्वीकार कर लेंगे। क्योंकि कौन है जो अपने फ़ायदे को मालूम करके फिर भी उसको पाने से बचता रहे। अल्लाह तआला आपको इसका सामर्थ्य दे। इस समय आवश्यकता है कि वे लोग जो एक ही देश में रहते हैं बल्कि एक ही शहर में रहते हैं, एक ही भाषा बोलते हैं, एक ही कुएँ से पानी पीते हैं और एक ही नदी में नहाते हैं आपसी दुश्मनी और ईर्ष्या-द्वेष को छोड़कर सुलह की ओर क़दम बढ़ाएँ।

दूसरा पैग़ाम -

इस पैग़ाम के अलावा एक और भी पैग़ाम है जो मैं आप लोगों को पहुँचाना चाहता हूँ और वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का दावा है। ख़ुदा तआला ने अपने फ़ज़्ल से हमारे बीच एक पवित्र वजूद (अवतार) पैदा किया है उसे क़बूल करो। मेरे पास इतना समय नहीं कि मैं उसकी सच्चाई के प्रमाण प्रस्तुत करूँ। हाँ एक छोटी सी बात बयान करता हूँ इससे सच्चाई को पसन्द करने वाले लोग समझ सकते हैं और वह यह है कि एक आदमी ख़ुदा तआला की ओर से आने का दावा करता है और जो उससे मुक़ाबला करने के लिए उठता है, नाकाम हो जाता है। जो उसका अपमान करना चाहता है स्वयं अपमानित हो जाता है, जो उसे दुःख देना चाहता है स्वयं दुःख में पड़ जाता है, तो क्या ऐसा आदमी झूठा हो सकता है? अगर यह मान लिया जाए कि (नऊज़ुबिल्लाह) ऐसा आदमी झूठा हो सकता है तो फिर ख़ुदा की हस्ती पर भी सन्देह पैदा हो जाएगा। क्योंकि हम देखते हैं कि दुनिया की

हुकूमतें भी ऐसे आदमी को जो झूठा होकर उनकी ओर से ओहदेदार होने का दावा करता है पकड़ती और सज़ा देती हैं, मगर एक आदमी कहता है कि मैं ख़ुदा की ओर से आया हूँ हालाँकि वह नहीं आया तो उसे ख़ुदा तआला कुछ नहीं कहता बल्कि वह हर मुक़ाबला में विजय पाता है और हर जगह ख़ुदा की सहायता उसके साथ होती है। अगर ऐसा हो जाए तो फिर सच्चे नबी की कोई कसौटी ही नहीं रह जाती। इसलिए आप लोग हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावे पर ग़ौर करें कि जिसकी सच्चाई के लिए ख़ुदा तआला ने एक नहीं दो नहीं बल्कि लाखों निशान दिखाए। क़ादियान ही एक बहुत बड़ा निशान है। एक समय था कि वहाँ ज़रूरी चीज़ें भी न मिल सकती थीं, एक छोटा सा गाँव था। सप्ताह में एक बार डाक आती थी और वहाँ के प्राइमरी स्कूल के टीचर को डाक के काम का तीन रुपए माहवार भत्ता मिलता था। लेकिन अब क़ादियान में आबादी बढ़ने के कारण ज़मीनों की क़ीमत इतनी बढ़ गई है कि बड़े-बड़े शहरों में भी उतनी न होगी। अब यूरोप, अमेरिका,और अफ़्रीका इत्यादि से डाक आती है और दूर-दूर के देशों से लोग खिंचे चले आते हैं। एक सब पोस्टमास्टर और क्लर्क काम करते हैं। नि:सन्देह बहुत से शहरों में इससे बड़ा काम होता है लेकिन प्रश्न यह है कि क्या कोई और भी ऐसा शहर है जिसके बारे में पहले से एक आदमी ने ऐलान किया हो कि मुझे ख़ुदा तआला ने इल्हाम के द्वारा इसकी तरक़्क़ी की शुभ सूचना दी है और फिर वह इस आश्चर्यजनक ढंग से बिना किसी भौतिक संसाधनों के इस तरह उन्नति पा गया हो। वहाँ कोई सरकारी विभाग न हो, यहाँ तक कि थाना भी न हो। आप लोग ग़ौर करें कि लोगों को कौन सी चीज़ उसकी ओर खींच रही है। अत: इसमें क्या सन्देह है कि ख़ुदाई हाथ काम कर रहा

है। इसी तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का इल्हाम था कि
(तज़किरः - 12) فَحَانَ اَنْ تُعَانَ وَتُعْرَفَ بَيْنَ النَّاسِ

समय आ गया है कि ख़ुदा तेरी मदद करे और दुनिया में तेरा नाम रौशन कर दे। हम देखते हैं कि वह आदमी जिसको दुनिया में कोई न जानता था और उसके ज़िला के लोग भी उससे परिचित न थे वह इतनी ख्याति पाता है कि दुनिया भर में उसका नाम मशहूर हो जाता है और विभिन्न देशों एवं क़ौमों के लोग उसकी जमाअत में दाख़िल हो जाते हैं, यहाँ तक कि वह क़ौम जो उसके देश में शासन करती है उसके लोग भी उसकी जमाअत में दाख़िल होते हैं और उसको अपना गर्व समझते हैं। कुछ लोग कह सकते हैं कि कुछ दूसरे गुमनाम लोग भी इसी तरह मशहूर हो गए हैं। लेकिन मैं कहता हूँ कि इसका उदाहरण दो कि किसी आदमी ने पहले से गुमनामी की हालत में इल्हाम पाकर ऐलान किया हो और फिर उसके बावजूद ख़ुदा तआला की सज़ा पाए बिना उसने दुनिया में तरक़्क़ी की हो और इस तरह उसका नाम दुनिया में चारों तरफ़ फैला हो और हर रुत्बे और मज़हब के लोगों ने उसकी बैअत की हो। इसी तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने पहले से ख़ुदा से इल्हाम पाकर यह घोषणा की थी कि

يَأْتُوْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ

अब कोई क़ादियान जाकर देख ले कि वहाँ अमेरिका और यूरोप तक के लोग भी आते हैं। यूरोप में तो आठ लोग बैअत भी कर चुके हैं। इसी तरह मिस्र से, अफ्रीका के किनारों और हिन्दुस्तान के विभिन्न क्षेत्रों से लोग आते हैं। भला यह कहना किसी साधारण आदमी का काम हो सकता है। कोई ऐसा आदमी पेश तो करो और अगर उसकी मिसाल नहीं मिलती तो सचपसन्दी इस बात का तक़ाज़ा करती है कि उसके

दावा को क़बूल किया जाए। जो बातें मैंने सुनाई हैं,किसी ख़ास मज़हब से सम्बन्ध नहीं रखतीं, हर धर्म के लोग इससे फ़ायदा उठा सकते हैं। हाँ मुसलमानों पर तो विशेष रूप से एक प्रमाण है क्योंकि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि -

(अलअनआम - 22) لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ

ज़ालिम कभी कामयाब नहीं होते। अब अगर नऊज़ुबिल्लाह मिर्ज़ा झूठा है तो क़ुरआन भी झूठा हो जाता है और अगर क़ुरआन करीम सच्चा है तो मिर्ज़ा साहिब के दावा के क़बूल करने के सिवा और कोई चारा नहीं और इस जमाअत की तरक़्क़ी भी इस हालत को पहुँच गई है कि अब वह समय नहीं रहा कि लोग कहें कि यह सिलसिला मिट जाएगा। अब दुनिया की कोई ताक़त हमारी तरक़्क़ी में रोक नहीं बन सकती और न कोई हुकूमत इसे रोक सकती है। हम ख़ुदा के फ़ज़्ल से इस हद को पहुँच चुके हैं कि ख़ुदा ने हमारे लिए तरक़्क़ी के दरवाज़े खोल दिए हैं। अगर सारी दुनिया मिलकर भी हमारी तरक़्क़ी को रोकना चाहे तो भी रोक नहीं सकती। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास एक आदमी आया और उसने कहा कि आप उस ख़ुदा की क़सम खाएँ जिसके क़ब्ज़े में आप की जान है कि मैं सच्चा हूँ। तो आपने क़सम खाई। मैं भी आपकी अनुसरण में उस ख़ुदा की क़सम खाकर कहता हूँ जिसके हाथ में मेरी जान है कि अब इस सिलसिला के लिए कोई चीज़ रोक नहीं बन सकती। ख़ुदा तआला ने स्वयं मुझे एक रोअया (स्वप्न) के द्वारा बताया है कि आसमान से सख़्त गरज की आवाज़ आ रही है और ऐसा शोर है जैसे तोपों के लगातार चलने से पैदा होता है और भयानक अन्धकार फैला हुआ है। हाँ कुछ-कुछ देर के बाद आसमान पर रोशनी हो जाती है। इतने में एक भयावह

स्थिति के बाद आसमान पर एक रोशनी पैदा हुई और बहुत मोटे और चमकदार शब्दों में आसमान पर

لَااِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ

(ला इलाह इल्लल्लाह मुहम्मद रसूलुल्लाह)

लिखा गया। इसके बाद किसी ने ऊँची आवाज़ से कुछ कहा, जिसका अर्थ यह था कि आसमान पर बड़े-बड़े परिवर्तन हो रहे हैं जिसका परिणाम तुम्हारे लिए अच्छा होगा। अतः इस सिलसिला की तरक़्क़ी के दिन आ गए हैं क्योंकि उस स्वप्न का एक हिस्सा पूरा हो गया और यूरोप के भयानक युद्ध के रूप में प्रकट हुआ है और पूर्णतः स्पष्ट है कि ख़ुदा तआला चाहता है कि इस्लाम की सच्चाई को रौशन करे और यह केवल उसी के हाथ से हो सकता है, जिसने मसीह मौऊद के हाथ पर बैअत की। ख़ुदा तआला का इरादा है कि हज़रत मसीह मौऊद की जमाअत फैले। क्योंकि वह ख़ुदा की तरफ़ से आया है। जिन लोगों का यह ख़्याल हो कि यह सिलसिला अमुक आदमी की वजह से चल रहा है, उसके बाद समाप्त हो जाएगा। वे सुन लें कि ऐसे बहुत से लोग थे जो यह कहते थे कि मिर्ज़ा साहिब मर गए तो यह सिलसिला भी मिट जाएगा। फिर बहुत थे दो यह कहते थे कि मौलवी नूरुद्दीन के कारण से चल रहा है। यहाँ तक कि ख़्वाजा ग़ुलाम सक़लैन साहिब ने भी ऐसा ही लिखा था। जिसका मैंने जवाब दिया था कि तुम ग़लत कहते हो कि किसी इन्सानी ताक़त से यह सिलसिला चल रहा है। अतः ऐसा ही हुआ। फिर अंग्रेज़ीदानों का ख़्याल था कि थोड़े से अंग्रेज़ी पढ़े हुए लोग इसे चला रहे हैं। लेकिन ख़ुदा तआला ने दो-तीन घटनाएँ एक के बाद दूसरी दिखाकर बता दिया कि यह ख़्याल ग़लत है। अतः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के देहान्त

के बाद प्रथम तो वह बेनज़ीर इन्सान मृत्यु पा गया जिसकी विद्वता का इक़रार ग़ैर अहमदी आलिमों को भी करना पड़ता था और द्वितीय उन लोगों को अलग कर दिया जो सिलसिला के लिए मज़बूत स्तम्भ के तौर पर समझे जाते थे और सिलसिला अहमदिया पर थोड़ी सी भी किसी प्रकार की कमज़ोरी न आने दिया। इससे साबित हो गया कि यह सिलसिला इन्सानी नहीं बल्कि ख़ुदा के हाथ का लगाया हुआ है। अतः समय आ गया है कि जिन्होंने बिना ग़ौर किए हज़रत मसीह मौऊद (अर्थात् इमाम महदी) अलैहिस्सलाम का इन्कार किया है उनसे अवश्य पूछा जाएगा। अगर यह सिलसिला (नऊज़ुबिल्लाह) झूठा है तो क़बूल करने वालों को सज़ा नहीं होगी। लेकिन जिन्होंने ग़ौर ही नहीं किया उनको ख़ुदा की ओर से अवश्य सज़ा मिलेगी, क्योंकि उन्होंने ग़ौर नहीं किया। मैं उम्मीद करता हूँ कि आप साहिबान दुनिया के कामों से समय निकालकर महीने में एक बार या कम से कम साल में एक-दो बार इस सिलसिला की किताबें अवश्य पढ़ेंगे और जानकार लोगों से बातें सुनेंगे। अगर यह बातें सच न हों तो आप लोग इन्कार कर दें। क्या हमारे हाथ में तलवार है कि हम किसी को इन बातों को मानने के लिए मज़बूर करते हैं? नहीं और कदापि नहीं, ख़ुदा तआला ने हज़रत मसीह मौऊद (अर्थात् इमाम महदी) को तलवार देकर नहीं भेजा और इसमें एक बहुत बड़ी हिकमत है और वह यह है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर इस्लाम के दुश्मनों ने इल्ज़ाम लगाया था कि उन्होंने तलवार के ज़ोर से इस्लाम फैलाया है। हालाँकि जब मुख़ालिफ़ों ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और असहाय मुसलमानों को हद से ज़्यादा सताया तभी आपने तलवार उठाई थी। फिर भी नादान लोगों ने यही कहा कि इस्लाम तलवार के ज़ोर से फैला है। लेकिन

अब जबकि दुनिया से इस्लाम उठ चुका था तो ख़ुदा तआला ने हज़रत मसीह मौऊद (अर्थात् इमाम महदी) अलैहिस्सलाम को खड़ा करके बता दिया कि जब उसका यह ग़ुलाम (सेवक) प्रमाण एवं तर्कों से लोगों के दिलों को जीत सकता है तो आक़ा ने क्यों न ऐसा किया होगा। चूँकि लोगों ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर तलवार उठाई थी इसलिए अवश्य था कि वह तलवार से ही सामना करते। लेकिन अब ख़ुदा तआला ने मज़हब के सम्बन्ध में तलवार उठाने से मना कर दिया है और ऐसा ज़माना आ गया है कि हम उसी सरकार के मज़हब पर जिसकी हुकूमत में रहते हैं आज़ादी से ऐतराज़ कर सकते हैं। यही कारण है कि हज़रत मसीह मौऊद ने तर्कों और प्रमाणों से काम लिया है। इसीलिए हमारे हाथ में तलवार नहीं और न हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हाथ में होनी थी। हम दलाइल देते हैं आप उन पर ग़ौर करें और अगर सच्चाई न पाएँ तो उनको न मानें, लेकिन सुनना और ग़ौर करना शर्त है। क्या सम्भव नहीं कि यह सिलसिला सच्चा हो? अगर सच्चा है तो मैं हर मज़हब के लोगों से पूछता हूँ कि बताओ ख़ुदा को क्या जवाब दोगे? तुम लोग झूठे ऐलानों और आवाज़ों की ओर तो ध्यान देते हो, लेकिन क्या कारण है कि ख़ुदा की ओर से जो आवाज़ आई है उसकी तरफ़ ध्यान नहीं देते।

अन्त में मैं फिर इस विषय की ओर ध्यान दिलाता हूँ कि आप लोगों में से हिम्मतवर लोग ज़रूर इन तरीक़ों पर चलने की कोशिश करें, जिनसे हिन्दुस्तान के यह लड़ाई-झगड़े दूर हों। अगर कोई मुझसे इस सम्बन्ध में पत्र-व्यवहार करेगा तो मैं तन, मन, धन से हर प्रकार की सेवा करने को तैयार रहूँगा। क्योंकि मैं चाहता हूँ कि वह समय आए कि हर तरफ़ अमन और सुलह हो और ख़ुदा तआला शीघ्र वह समय लाए

जो नबियों के समय लाया करता है। ताकि सारे लोग चाहे वे किसी भी धर्म के हों शिक्षा और राष्ट्रीयता के रूप में मिलकर सरकार की सेवा करें और धार्मिक कटुता और ईर्ष्या-द्वेष को छोड़ दें और सच्चे मज़हब की ख़ूबियों से आगाह होने का हर एक को मौक़ा मिले।